राष्ट्रीय संगोष्ठी

भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी

14–15 सितम्बर, 2015

पंजीयन प्रपत्र

नाम...

पद एवं संस्था का नाम...

....

संस्था का पता..

....

शोधपत्र का शीर्षक..

....

पंजीयन शुल्क

शिक्षक – 800 रू. शोध छात्र व अन्य –500 रू.

नोट : प्रतिभागी अपने रहने/ठहरने की व्यवस्था स्वयं करें।

परामर्श

प्रो. अनिल जैन

स्वागत समिति

डॉ. श्रुति शर्मा	डॉ. उर्वशी शर्मा
डॉ. रेणु व्यास	डॉ. जगदीश गिरी
डॉ. मंदाकिनी मीणा	डॉ. गीता सामौर
डॉ. वीरेन्द्र सिंह	डॉ. अर्जुन सिंह
डॉ. कैलाश पंवार	विशाल विक्रम सिंह
श्रुति शर्मा	अनिता रानी
तारावती मीणा	सुंदरम शांडिल्य
वर्षा वर्मा	

भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(14–15 सितम्बर, 2015)

बुक–पोस्ट

श्रीमान्/श्रीमती ....

....

....

....

प्रेषक :

डॉ. विनोद शर्मा

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–302004

मो. 9950997599 ई–मेल:vinoddr68@gmail.com

भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी

राष्ट्रीय संगोष्ठी

14–15 सितम्बर, 2015

संयोजक

डॉ. विनोद शर्मा

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

मो. 9950997599, 7597530500

आयोजन सचिव

डॉ. करतार सिंह

सह आचार्य

मो. 9414795184

आयोजक

हिन्दी विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–302004

फोन. 0141–2711070–2404

भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी

उदारीकरण और भूमंडलीकरण के नारों के बीच जी रहे मनुष्य के लिए यह समय चकाचौंध और हतप्रभ कर देने वाला है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा बनाए जा रहे माहौल में आज बहुत कुछ बदल गया है और बदल रहा है। सूचना–क्रांति ने प्रत्येक व्यक्ति को 'विश्वग्राम' का नागरिक बना दिया है। उसके सरोकार अब अपने निजी लोक से आगे विस्तार पा रहे हैं। इसी का नतीजा है कि किसी भी देश की समस्या वैश्विक हो जाती है। लेकिन भूमंडलीकृत विश्व में विस्तार पाते जन–समाज की निजी परम्पराएं एवं संस्कृति धीरे–धीरे खत्म हो रही है। ग्लोबल दुनिया का सहयात्री बनने की अन्तहीन दौड़ में उसकी अपनी विशिष्टताएं विलुप्ति के कगार पर हैं। खान–पान, रहन–सहन, उत्सव–त्योहार से लेकर भाषा तक भूमंडलीकरण के निशाने पर हैं। एकरूप विश्व की कामना – सामासिक संस्कृति को अत्यन्त निर्ममता से सपाट बनाने की कोशिश–अन्ततः असंतोष का कारण बनती जा रही है।

एकरूप विश्व–एक भाषा, एक संस्कृति, एक पहनावा, एक मानसिकता–के इसी सिद्धांत के परिणामस्वरूप विश्व की क्षेत्रीय भाषाओं पर अस्तित्व का संकट उत्पन्न हुआ है। इस परिदृश्य में बाजार की अत्यधिक संभावनाओं के कारण हिन्दी पर अस्तित्व का खतरा तो नहीं है किंतु उसकी बोलियाँ पहचान के संकट का सामना कर रही हैं। बोलियाँ ही भाषा की आधारभूत चेतना एवं संवेदना की वाहक होती हैं। बोलियों के माध्यम से भाषा में लोकतंत्र का अस्तित्व होता है। बोलियाँ ही भाषा में अपने–अपने सामाजिक–आर्थिक समूह का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस तरह बोलियों के खत्म होने के साथ भाषा का बाह्य कलेवर भले ही बना रहे लेकिन आन्तरिक संवेदना और समरसता समाप्त हो जाती है। कारपोरेट ताकतों ने भाषा में अपने 'निजी' अर्थ प्रत्यारोपित किए हैं। इसी तरह की प्रक्रिया से गुजरते हुए हिन्दी की 'जातीय अस्मिता' संकटग्रस्त है। विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों से प्रचारित हिन्दी 'निर्वात की भाषा' है जिसका किसी भी सामाजिक समूह से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। इस तरह भूमंडलीकृत समय की हिन्दी निर्मित एवं कृत्रिम है जो आधारविहीन है जो किसी भी भारतीय समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करती।

भूमंडलीकृत विश्व में संख्यात्मक दृष्टि से मंदारिन (चीनी) के बाद दूसरे स्थान पर स्थित हिन्दी का क्षितिज विस्तृत हुआ है। हिन्दी ने मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम जैसे देशों के साथ–साथ अमेरिका, ब्रिटेन, चीन और मध्यपूर्व के देशों में भी अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज करायी है। व्यापार, फिल्म एवं मीडिया ने भी इसके विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

भारत में भूमंडलीकरण के बाद अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ा है किंतु हिन्दी के लिए भी नए अवसर खुले हैं। आज अंग्रेजी बनाम हिन्दी की बजाय अंग्रेजी और हिन्दी का समीकरण बन गया है। हिन्दी भाषी समुदाय सबसे बड़ा बाजार होने से विदेशी कंपनियों के टी.वी. चैनल हों या बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विज्ञापन, सब जगह हिन्दी के पक्ष में बदलाव दिखलाई दे रहा है। इंटरनेट और सोशल मीडिया पर हिंदी की प्रभावशाली उपस्थिति है। अनुवाद के जरिए भी हिन्दी की दुनिया का विस्तार हुआ है। आज हिन्दी रोजगार की भाषा बन रही है।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य हिन्दी की वास्तविक एवं ठोस जमीन की पड़ताल करते हुए भूमंडलीय समय को भाषायी दृष्टि से परखना है।

प्रस्तावित विषय

- भूमंडलीकरण और हिन्दी की चुनौतियां
- बाजार की हिन्दी और हिन्दी का बाजार
- राजभाषा के रूप में हिन्दी
- संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी
- विश्वभाषा के रूप में हिन्दी
- सूचना क्रांति और हिन्दी
- हिन्दी की संप्रेषण क्षमता और मीडिया
- अनुवाद के विविध आयाम और हिन्दी
- भूमंडलीय समय में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाएं
- नये विमर्शों की भाषा और हिन्दी
- वेब दुनिया में हिन्दी
- लिपि एवं भाषा के सवाल और हिन्दी
- सिनेमा और हिन्दी

पंजीयन शुल्क

शिक्षक – रूपये 800
शोध छात्र व अन्य – रूपये 500